5 दिसंबर, 2015 को जनमोर्चा का 58वां स्थापना दिवस समारोह

पत्रकारिता: बदलती तकनीक और बदलता एजेंडा

जनमोर्चा के 58वें स्थापना दिवस के आयोजकों को आज के कार्यक्रम में मुझे आमंत्रित करने के लिए आभार प्रकट करता हूँ । ऐसे कार्यक्रमों में पत्रकारों व मीडियाकर्मियों से मिलने का मौका मिलता है और मैं सौभाग्यशाली हूँ कि आप लोगों ने यह अवसर मुझे दिया । मैं अपनी ओर से तथा भारतीय प्रेस परिषद् की ओर से इससे जुड़े हुए सभी महानुभावों का अभिवादन करता हूँ ।

जनमोर्चा अपनी दूरूह राह पर चलता हुआ 58वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है । मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि जनमोर्चा के संचालकों को भी इसके दीर्घ जीवन की कल्पना नहीं थी । यह सभी जानते थे कि यह निर्भीक पत्र किसी के दबाव में नहीं आएगा और इसी कारण जिन्हें डर था, इसका गला घोंटने का प्रयास किया । इसी क्रम में यह समाचारपत्र जो सीमित साधनों पर आधारित था, के तत्कालीन संपादक को विभिन्न आरोपों में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया । न्यायपालिका के हस्तक्षेप और अपनी दृढ़ शक्ति के बल पर वे अपनी राह से डिगे नहीं । अभी-अभी बांगलादेश प्रेस परिषद् के अध्यक्ष एवं सदस्यगण भारत आए थे । जब उन्हें कहा गया कि सहकारिता के आधार पर आपका समाचारपत्र पिछले 57 वर्षों से प्रकाशित हो रहा है तो पहले वे चौंके, यह

उन्हें अविश्वसनीय लगा परंतु बाद में जब इसके बारे में उन्हें विस्तृत जानकारी दी गई, तो वे प्रसन्न हुए । जनमोर्चा 75 रूपये की पूंजी से आरंभ हुआ और आज वह अपने विस्तार और विकास क्रम में आगे ही बढ़ रहा है । जनमोर्चा वित्तीय लाभ के लिए नहीं परंतु सहकारिता के सिद्धांतों पर चलने वाला एक समाचारपत्र है जो इसे निर्भीक बनाए हुए है । मेरा विश्वास है कि सहकारिता के आधार पर छपने वाले समाचारपत्रों की संख्या ज्यादा हो जाए तो इसकी विश्वसनीयता बढ़ जाएगी । मुझे उम्मीद है कि स्वतंत्र विचारधारा से ओत-प्रोत इसका संचालक मंडल इसकी रक्षा भी करेगा और इसे आगे बढ़ाने में सहायक भी होगा ।

मीडिया समाज का आइना है और समाज एक महत्वपूर्ण घटक है जिससे मीडिया बनती है । अत: इन्हें एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता । पत्रकार, फोटो पत्रकार या कोई भी अन्य मीडियाकर्मी हमें हमारे आसपास होने वाली घटनाओं की सूचना देते हैं और विचारों के निर्माण में सहायता करते हैं । मीडिया न केवल लोगों को जानकार बनाता है बल्कि नीतियां बनाने और उन्हें लागू करने के क्षेत्र में विचारों और विकल्पों को पेश करने का बहुत ही अहम काम करता है, ताकि हम हमारे लोकतंत्र की कार्यप्रणाली में प्रभावशाली रूप से भाग ले सकें । लोकतांत्रिक समाज में, समाज के कार्य-कलाप सभी नागरिकों की समान, सक्रिय व प्रभावशाली भागीदारी से पूरे किए जाते हैं और इस सहभागिता

में सभी सूचनाएं प्राप्त करनी आवश्यक हैं । जनता को दी जा रही सूचना संपूर्ण और सही होनी चाहिए । प्रिंट, इलैक्ट्रॉनिक या इंटरनेट के जरिए प्रकाशित सूचना या समाचार पूर्वानुमानित विचारों, कल्पनाओं, पूर्वाग्रहों व पक्षपात से मुक्त होने चाहिए जिसमें संपादकीय दल के साथ-साथ रिपोर्टरों के विचारों और दर्शन को थोपा न गया हो । जनता का अधिकार है कि उसे कहा जाए कि समाचार क्या है और क्या है संपादकीय विचार । दोनों को मिश्रित नहीं किया जाना चाहिए ।

पत्रकारिता का कार्य पवित्र व कठिन होता है और इसकी ज़िम्मेदारियां किसी अन्य सेवा संबंधी कार्य से कम नहीं होती हैं बल्कि मेरा मानना है कि पत्रकारिता किसी अन्य पेशे से कई गुणा ज्यादा पवित्र व ज़िम्मेदारी से भरपूर है । यह किसी व्यक्ति को ही प्रभावित नहीं करता है परंतु इसकी आवाज़ या उसके शब्द पूरा राष्ट्र सुनता है जो अत्यंत प्रभावी होता है । पत्रकार की कलम में बहुत शक्ति होती है । इसी कारण कार्यपालिका, विधायी और न्यायपालिका जोकि संविधान प्रदत्त राज्य के तीन अंग हैं, के समान मीडिया को राज्य का चौथा स्तंभ माना गया है ।

आज की विचारगोष्ठी का विषय 'पत्रकारिता: बदलती तकनीक और बदलता एजेंडा' है ।मैं इस विषय का ज्ञानी नहीं हूँ और ईमानदारी से कहूँ इसे जानने और समझने के लिए ही मैं यहां आया हूँ । फिर भी

मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि आज सभी क्षेत्रों में जिस तेज़ गति से विज्ञान और तकनीक तरक्की कर रहे हैं, वह एक बड़ी उपलब्धि है । किसी भी विषय में ज्ञान और सूचना की कोई सीमा नहीं है । अत: वर्तमान दशक को सूचना प्रौद्योगिकी दशक कहा जा सकता है । आज यदि आपके पास स्मार्ट फोन या टैब या लैपटॉप है जो इंटरनेट से जुड़ा हुआ है, आप बहुत आसानी से दुनिया का कोई भी समाचार न केवल पढ़ सकते हैं पर बना भी सकते हैं और उसे प्रसारित भी कर सकते हैं । सूचना प्राप्त करने और प्रसारित करने में प्रगति और उसके प्रभाव से जीवन के अन्य सभी पहलुओं में क्रांति हो रही है । हालांकि, सभी सूचनाएं ज्ञान नहीं हैं और न ही ये सभी प्रगति और समाज के कल्याण के लिए उपयोगी हैं । इन सूचनाओं को पक्षपात और पूर्वाग्रह मुक्त मस्तिष्क से विभिन्न तरीके से जांचा जाना चाहिए और इसे केवल तभी स्वीकारा जाना चाहिए जब यह सही और तर्कसंगत हो । सच और झूठ, तार्किक और तर्कहीन, अच्छे और बुरे में अंतर स्पष्ट करने के लिए जनसंचारियों के रूप में, पत्रकारों की ज़िम्मेदारी समाज के किसी अन्य सदस्य से कहीं ज़्यादा है ।

जिस गति से तकनीक का विकास हो रहा है, उससे पुराने उपस्कर जल्द ही अप्रचलित और अनावश्यक हो गए हैं । इन उपस्करों को आधुनिक तकनीक वाले उपस्करों से बदलना बहुत महंगा हो सकता है जिससे छोटे और मध्यम मीडिया केंद्रों पर बड़े मीडिया घरों के साथ

मुकाबले में खड़े होने के कारण भारी दबाव बन सकता है । एक मीडिया केंद्र की स्थापना करने और उसे चलाने में लगने वाली कीमत के कारण बहुत-से स्वतंत्र और छोटे मीडिया केंद्र परिस्थितियों से जूझ रहे हैं और उनका स्थान बहुराष्ट्रीय मीडिया केंद्र ले रहे हैं । यह गंभीर चिंतन का विषय है और इसमें एक सकारात्मक पहल की ज़रूरत है ।

इस क्षेत्र में बहु-मीडिया कर्मियों और कंपनियों के आने से कुछ अमीर व्यक्तियों, परिवारों और संस्थानों ने राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समाचारों व विचारों के प्रसारण पर नियंत्रण कर रखा है । समाचारों और विचारों पर एकाधिकारिक नियंत्रण, संपूर्ण विश्व के लिए हानिकारक साबित हो सकता है । आज समाचारपत्रों का एजेंडा पत्रकारों या संपादकों द्वारा नहीं परंतु मालिकों या उनके मनोनीत व्यक्तियों द्वारा निर्धारित हो रहा है । यह बहुत शुभ संकेत नहीं है । आज हाहाकार या जयजयकार की होड़ में पत्रकारिता गुम सी होती जा रही है । कुछ पत्रकार गुटों में विभाजित हैं । पत्रकार बढ़ रहे हैं लेकिन पत्रकारिता सिकुड़ सी गई है । इसका उपयोग पॉवरटूल की तरह हो रहा है । आज़ादी के इतने वर्षों बाद भी न तो गांव और न ही किसान हमारी मीडिया की विषयवस्तु बन सके हैं, यह बड़े दुर्भाग्य की बात है । मुझे तब बड़ा दुख हुआ जब एक जाने-माने पत्रकार ने कहा कि आपातकाल में भी संघर्ष करते पत्रकार दिखाई दे रहे थे पर आज तो जब सत्ता झुकने को कहती है तो बहुत से पत्रकार सरकारों के सामने लेटने को

तैयार हैं । इस परिस्थिति में यह आवश्यक है कि समाचारपत्रों को सशक्त करने और इसके साथ-ही-साथ सूचना के विभिन्न स्रोतों की सुरक्षा हेतु उन्हें बढ़ावा देने के लिए समाचार संस्थाओं और मीडियाकर्मियों को एक साथ आगे आना चाहिए । खुद को सुधारने के लिए एक तंत्र की आवश्यकता है ताकि इसके पतन को रोका जा सके । परंतु किसी भी परिस्थिति में इस पर नियंत्रण या इसका नियमन बाहरी स्रोत से नहीं हो । पत्रकारों को केवल समाचार एकत्रित करने वालों और विचारों को प्रस्तुत करने वालों की तरह नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माता के रूप में कार्य करना होगा ।

पत्रकारों का कार्य आसान नहीं है । उसमें कठिन कार्य होते हैं और आपकी रिपोर्टिंग और प्रसारण समाज के लिए ही हैं । अत: समाज में आपका बहुत सम्मान है । इसलिए अपने कार्य को फैलाना और उजागर करना और ऐसा करते हुए अपने सम्मान को और बढ़ाना आपकी ज़िम्मेदारी है । किसी सूचना को प्रस्तुत करते हुए पत्रकारिता आचरण से जुड़े रहने का आपका निर्णय बड़े स्तर पर आपकी और आपके कार्य की गरिमा को ज़रूर बढ़ाएगा ।

मैं जनमोर्चा के दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ ।

धन्यवाद ।